संप्रदायों का परिचय (2 का भाग 1)

विवरण: इस्लाम के संप्रदायों का परिचय। भाग 1: संप्रदायों पर इस्लाम का दृष्टिकोण और एक मुसलमान भ्रम से कैसे बच सकता है।

द्वारा Imam Mufti (© 2012 IslamReligion.com)

प्रकाशित हुआ 08 Nov 2022 - अंतिम बार संशोधित 07 Nov 2022

श्रेणी: पाठ >इस्लामी मान्यताएं > इस्लाम को समर्पित संप्रदायों के साथ प्रबंधन

श्रेणी: पाठ >सामाजिक बातचीत > इस्लाम को समर्पित संप्रदायों के साथ प्रबंधन

पाठ का उद्देश्य:

- यह समझना कि इस्लाम एकता का आदेश देता है और विभाजन को दूर करता है।
- यह समझना कि सभी संप्रदाय एक समान नहीं हैं: कुछ "कम" गलतियों वाले संप्रदाय हैं, लेकिन फिर भी मुसलमान हैं और कुछ ऐसे पंथ भी हैं जो खुद को मुस्लिम कहते हैं, लेकिन सार्वभौमिक रूप से गैर-मुस्लिम माने जाते हैं।
- भ्रम से बचने के लिए इस्लामी मार्गदर्शन जानना।
- "सहाबा" के महत्व को समझना।

अरबी शब्द

- *?????* - "सहाबी" का बहुवचन, जिसका अर्थ है पैगंबर के साथी। एक सहाबी, जैसा कि आज आमतौर पर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह है जिसने पैगंबर मुहम्मद को देखा, उन पर विश्वास किया और एक मुसलमान के रूप में मर गया।
- *??????* - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, किया या करने को कहा।

जबकि अधिकांश मुसलमान एक समान मौलिक विश्वास रखते हैं, 1.62 बिलियन की मुस्लिम आबादी (पृथ्वी की आबादी के एक चौथाई के करीब [1]) जो महाद्वीपों के दूर हिस्सों में और 49 देशों में फैली हुई है जहां मुसलमान बहुसंख्यक हैं और इनका इतिहास एक हजार साल से भी अधिक का है, सभी लोग जो खुद को मुसलमान कहते हैं, वे बिल्कुल एक जैसे नहीं होते हैं। उनके बीच कभी-कभी महत्वपूर्ण धार्मिक मतभेद होते हैं। आने वाले दो पाठों में हम निम्नलिखित बिंदुओं पर अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे:

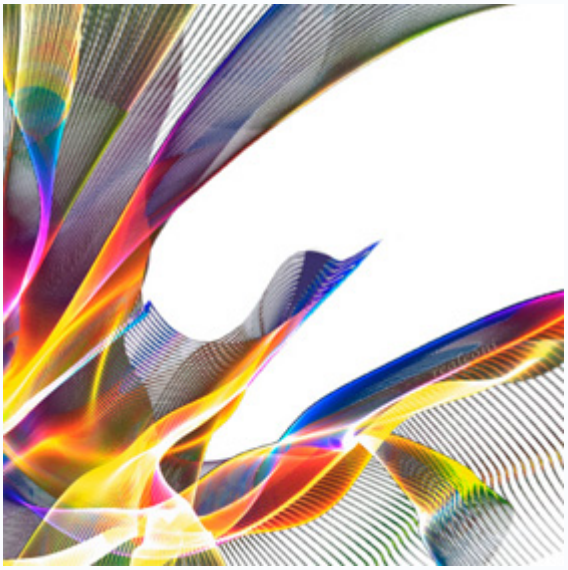

क्या कई संप्रदायों के होने का मतलब यह है कि इस्लामी शिक्षाएं (क़ुरआन और सुन्नत) उन्हें

अनविार्य करती है? जवाब है, नहीं । महत्वपूर्ण बात यह महसूस करना है कि अन्य धर्मों के वपिरीत, अल्लाह ने इस्लाम (ईश्वर का मानवता के लिए अंतमि रहस्योद्घाटन और सबसे पूर्ण धर्म) की रक्षा की जम्मिेदारी खुद अपने ऊपर ली है। आपको बाइबलि या लगभग सभी अन्य धार्मकि कतिाबो में ईश्वर की ओर से कोई वादा नहीं मलिेगा कि वह इसकी रक्षा करेगा। दूसरी ओर, क़ुरआन में ईश्वर ने दो महत्वपूर्ण वादे कयि हैं:

"ईश्वर ने अपने धर्म इस्लाम को पूरा कर दयिा है" (क़ुरआन 5:3)

ईश्वर अपने धर्म में बदलाव से इसकी रक्षा करेगा (क़ुरआन 15:9)

संप्रदायों का अस्तत्वि उन कारणों से है जनिकी चर्चा इस पाठ की सीमा से बाहर है।

सभी संप्रदाय एक समान नहीं हैं: घेरों का एक सादृश्य

एक सादृश्य ही संप्रदायों के मुद्दे को बेहतर ढंग से समझा सकता है। क़ुरआन और सुन्नत केंद्र में हैं जसिके चारों ओर कई घेरे हैं। कुछ मुसलमान घेरे के भीतर हैं, लेकनि अन्य इसके बाहर हैं। दूसरे शब्दों मे कहें तो कुछ मुसलमान केंद्र के करीब हैं, अन्य दूर हो सकते हैं। फरि एक लाल घेरे के बारे में सोचें जो केंद्र से इतनी दूर है कि जो कोई भी उस लाल घेरे के बाहर है, वह मुसलमान भी नहीं माना जाता है। घेरे का अर्धव्यास इस बात का माप है कि संप्रदाय कतिना "वकिृत" है।

दूसरे शब्दों में, सबसे "वकिृत" संप्रदाय जन्हिें पंथ कह सकता है, लाल घेरे से बाहर हैं। वे वही हैं जनिका स्थापति इस्लामी वश्विासों और प्रथाओं के साथ सबसे बड़ा मतभेद है। उदाहरण हैं अहमदी, बहाई और द्रूस।

संप्रदाय भ्रमति करते हैं, मैं कसिका अनुसरण करूं?

भ्रमति करने वाली बात यह है कि वभिन्नि संप्रदायों के अस्तत्वि के कारण एक नए मुस्लमि को कसिका अनुसरण करना चाहए, खासकर जब अधकिांश संप्रदाय क़ुरआन और सुन्नत का पालन करने का दावा करते हैं। नया मुस्लमि क्या करे? वह कैसे तय करे कि कौन सही है और कौन गलत? सरल शब्दों में, एक नया मुस्लमि भ्रम से कैसे बचता है? आइए इस प्रश्न के उत्तर को कुछ बदिुओं में बांटते हैं:

पहला, अगर हम क़ुरआन और सुन्नत की तरफ जाएं, तो हमें इस सवाल का जवाब मलि जाएगा। आप देखए, क़ुरआन और सुन्नत पाठ हैं; कुछ लोग सर्फि क़ुरआन को मानते हैं और सुन्नत (पैगंबर की परंपराओं) को अलग कर देते हैं। उसके बाद वे जसि तरह से चाहें क़ुरआन की व्याख्या करते हैं। क़ुरआन को ठीक से समझने का एकमात्र तरीका है कि पैगंबर की परंपराओं पर वापस जाएं और रहस्योद्घाटन के समय मौजूद लोगों की समझ के अनुसार दोनों को समझें। इन पाठों का खुलासा उनके समय में हुआ था, कई पाठ उन्हें संबोधति कए गए थे[2], और उनके पास सबसे अच्छा शक्षिक (अल्लाह के पैगंबर) था जो उन्हें वो समझाने के लिए मौजूद था जसिकी स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती थी। आइए देखें कि पैगंबर ने इस मामले में क्या कहा,

"सबसे अच्छे लोग मेरी पीढ़ी के हैं, फरि वे जो उनके बाद आएंगे, फरि वे जो उनके बाद आएंगे।" (सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लमि)

पैगंबर ने मुसलमानों की पहली तीन पीढ़ी को "सर्वश्रेष्ठ" बताया। यदि वे इस्लाम के पैगंबर के अनुसार "सर्वश्रेष्ठ" हैं, तो यह समझ में आता है कि हमे इस्लाम को उसी तरह से समझना चाहए और अभ्यास करना चाहए जसि तरह से "सर्वश्रेष्ठ" लोगों ने इस्लाम को समझा और अभ्यास कयिा।

दूसरा, यह जानना महत्वपूर्ण है कि इस्लाम की पहली पीढ़ी को "सहाबा" की पीढ़ी के रूप में जाना जाता

है। अरबी में "सहाबा" शब्द का अर्थ है "साथी"। इसका एकवचन "सहाबी" है, जिसका अर्थ है "साथी"। दूसरी और तीसरी पीढ़ी के भी नाम हैं, लेकिन अभी जानने के लिए सबसे महत्वपूर्ण शब्द "सहाबा" है।

तीसरा, यह महत्वपूर्ण है कि कोई स्वयं निर्णय न करे कि कौन मुसलमान है और कौन नहीं। जब किसी के पास उचित ज्ञान न हो, तो इस तरह के मुद्दों को विद्वानों के ऊपर छोड़ देना चाहिए। कुछ संप्रदाय ऐसे होते हैं जिनकी अपनी मान्यताओं में अच्छाई और बुराई शामिल होती है। सूफियों[3] का एक उदाहरण लें। उनकी सभी मान्यताएं और प्रथाएं गलत नहीं हैं, लेकिन कुछ गलत हैं। अपने ज्ञान की कमी के कारण सतर्क रहना चाहिए ताकि भ्रमित न हों।

फुटनोट:

[1] (http://www.pewforum.org/The-Future-of-the-Global-Muslim-Population.aspx)

[2] कभी-कभी किसी पाठ के प्रकाशन के लिए एक विशिष्ट कारण होता था, लेकिन कई लोग इसके सामान्य अर्थ को मानते हैं।

[3] http://www.islamreligion.com/articles/1388/

इस लेख का वेब पता:
http://www.newmuslims.com/hi/lessons/128

कॉपीराइट © 2011-2022 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।

ajsultan